विकास शर्मा

ग़ज़ल

इश्क़ का ये हुनर नहीं मिलता
साथ तेरा अगर नहीं मिलता

जिस्म तो तुम ख़रीद सकते हो
प्यार दौलत से पर नहीं मिलता

दु:ख व सुख में पड़ोसी शामिल हों
मुझको ऐसा शहर नहीं मिलता

हमको ये छीनना ही पड़ता है
हक़ कभी मांगकर नहीं मिलता

ऊंची-ऊंची इमारतें हैं सब
मुझको शहरों में घर नहीं मिलता

जिसमें रहती, वो बेवफ़ा लड़की
उस गली से गुज़र नहीं मिलता

शहर-ए-इश्क़ में हम हुस्न को आने नहीं देते
मगर तुम ज़िंदगी हो तुमको दिल कैसे नहीं देते

लुटाते, नाचती औरत पे, जो नोटों के बंडल को
किसी भी बे-सहारे को, वो दो पैसे नहीं देते

कराते रोज़ ही शॉपिंग, जो अपनी दिलरूबा को, वो
बरस में इक दफा मां-बाप को कपड़े नहीं देते

चुनें हम ख़्वाब की ईंटें, मुक़द्दर के महल में, पर
पसीने का कभी सीमेंट हम लगने नहीं देते

उन्हें तो सब्र का भी फल, कभी मीठा नहीं लगता
जो अमिया तोड़ लेते हैं, उसे पकने नहीं देते